प्राक्कथन

साहित्य एक कला है | मनुष्य के सौंदर्य और आनंद की वृत्तियों को जितना अधिक संतुष्ट साहित्य कला कर सकती है,उतना अधिक अन्य कोई कला नहीं | शुष्क और नीरस जीवन में सरसता और प्रसन्नता के निर्झर बहाने का श्रेय साहित्य को है | साहित्य सभ्यता और संस्कृति का निर्माण करता है | भारतीय संस्कृति के गुणगान विश्व में हो रहे है, इसके पीछे उसके महान साहित्य की विरासत कारणभूत है | साहित्य में निर्जीव तथ्यों का वर्णन नहीं होता,बल्कि भावनाओं और अनुभूतियों का प्रस्तुतीकरण होता है | विज्ञान के तथ्य हमारे मस्तिष्क को प्रभावित करते है,किन्तु साहित्य में चित्रित भावनाएँ हमारे हृदय को प्रभावित करती है |

मेरी विज्ञान के विषय से अधिक रूचि साहित्य में रही है | विशेषकर हिंदी साहित्य के प्रति मैं ज़्यादातर आकृष्ट रही | मैंने बी.ए में हिंदी विषय को मुख्य विषय के रूप में चुना | एम.ए,बी.एड और एम.एड हिंदी विषय के साथ किया | मैंने हिंदी विषय में 'नेट' की परीक्षा उत्तीर्ण की | उस समय मैंने हिंदी साहित्य का गहराई से अध्ययन किया था | मेरी एक ही महत्त्वाकांक्षा थी-हिंदी विषय में शोध कार्य करने की | मेरी यह इच्छा भी पूरी होने जा रही है |

शोध कार्य के लिए उपयुक्त विषय के चयन को लेकर मैं दुविधा में थी | मुझे शोध कार्य करने हेतु कोई ऐसा विषय चाहिए था,जो नया हो | मुझे इतना ज्ञात था कि आज तक प्रेमचंद, जैनेंद्र कुमार, यशपाल, इलाचन्द जोशी साथ ही दलित विमर्श,नारी विमर्श पर बहुत से शोध कार्य हो चुके हैं | मैंने अपने दुविधा का समाधान करने हेतु कुछ ऐसे साहित्यकारों के बारे में जानने की कोशिश की जिनका साहित्य शोध कार्य से अछूता रहा है | तब मैंने ऐसी लेखिका का नाम सुना,जिनके साहित्य पर ज़्यादा काम नहीं हुआ

था | वह लेखिका थी-'राजी सेठ' | मैंने शोध कार्य के लिए विषय का चयन करने से पूर्व राजी सेठ की कुछ रचनाएँ पढ़ी | मैंने राजी सेठ का 'निष्कवच' पढ़ा और मैं प्रभावित हुई | राजी सेठ की 'तीसरी हथेली' कहानी संग्रह की कहानियों ने भी मुझे प्रभावित किया | राजी सेठ के साहित्य ने मुझे इतना प्रभावित किया कि उनका अन्य साहित्य मैं बेताबी से पढ़ती गई | मैंने अपनी निर्देशिका के सम्मुख राजी सेठ के साहित्य पर शोध कार्य करने का प्रस्ताव रखा | अपनी निर्देशिका के मार्गदर्शन से मैंने शोध कार्य का विषय तय कर लिया | राजी सेठ के समग्र साहित्य को शोध का विषय बनाया |

मेरे शोध कार्य का विषय है-"राजी सेठ का समग्र साहित्य:एक अनुशीलन" मेरे इस शोध प्रबंध के लिए अत्यंत उपयुक्त और महत्त्वपूर्ण साहित्यिक जानकारी दो पुस्तकों से प्राप्त हुई | वह पुस्तकें हैं-'राजी सेठ : संवेदना का कथा दर्शन'- रमेश दवे और 'राजी सेठ : कथा सृष्टि और दृष्टि'- डॉ.कश्मीरी लाल | इन पुस्तकों के अलावा राजी सेठ का कथा साहित्य : चिंतन और शिल्प - डॉ.सरोज शुक्ला,राजी सेठ का रचना संसार- डॉ.स्नेहजा सोनाले और कथाकार राजी सेठ-डॉ.अनुराधा मिरगणे इन तीनों शोध पुस्तकों में उपलब्ध सामग्री ने मेरे शोध कार्य में उपस्थित कठिनाईयों को सुलझाने में महद अंश में सहायता की है |

मैंने अनुसंधान की सुविधा के लिए शोध-प्रबंध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है |

अध्याय विभाजन-

प्रथम अध्याय-'विषय प्रवेश'

इस अध्याय के अंतर्गत साहित्य और समाज,आधुनिक काल की पृष्ठभूमि और आधुनिक काल की विभिन्न परिस्थितियों पर प्रकाश डाला है | इसी अध्याय के अंतर्गत मैंने उपन्यास की परिभाषा और स्वरूप,हिंदी के उपन्यासकार और उनके उपन्यास,कहानी की परिभाषा और स्वरूप,हिंदी के

प्रमुख कहानीकार,उपन्यास और कहानी में अंतर,आधुनिक हिंदी साहित्य पर विभिन्न विचारधाराओं का प्रभाव और राजी सेठ की अपनी विचारधारा पर प्रकाश डाला है |

द्वितीय अध्याय -'राजी सेठ के उपन्यासों का अध्ययन और अनुवाद कार्य'-

इस अध्याय के अंतर्गत सबसे पहले राजी सेठ के व्यक्तित्व और कृतित्व को जानने और समझने का प्रयास किया है | इस अध्याय में राजी सेठ की औपन्यासिक कृतियों 'तत-सम' और 'निष्कवच' के कथावस्तु को प्रस्तुत किया गया है | 'तत-सम' और 'निष्कवच' उपन्यास के कथ्य को समझने का प्रयास किया है साथ में इन उपन्यासों के मुख्य और गौण पात्रों पर भी प्रकाश डाला है | इसी अध्याय के अंतर्गत राजी सेठ के अनुवाद कार्य को प्रस्तुत किया है |

तृतीय अध्याय - 'राजी सेठ की कहानियों का साहित्यिक अध्ययन '

इस अध्याय में राजी सेठ के-'अन्धे मोड़ से आगे','दूसरे देशकाल में','तीसरी हथेली','यात्रा-मुक्त','यह कहानी नहीं' और 'ग़मे-हयात ने मारा' इन कहानी संग्रह में संग्रहित कहानियों का विस्तार से अध्ययन किया गया है |

चतुर्थ अध्याय -'राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित समस्याएँ'

इस अध्याय में सर्व प्रथम आधुनिक युग की प्रमुख समस्याओं को विश्लेषित किया है | इसी अध्याय के अंतर्गत राजी सेठ के कथा साहित्य में प्रतिबिंबित दांपत्य जीवन की समस्या, आर्थिक समस्या,नारी समस्या,अलगाव की समस्या, अंतर्द्वंद्व की समस्या, संत्रास की समस्या,अकेलेपन की समस्या, तनाव की समस्या, निम्नवर्ग के शोषण की समस्या, देशविभाजन की समस्या और वृद्धों की समस्या आदि समस्याओं को विस्तार से समझने का प्रयास किया है |

पंचम अध्याय- 'राजी सेठ का कथा साहित्य: भाषिक शिल्प'

इस अध्याय के अंतर्गत राजी सेठ के कथा साहित्य की भाषिक उपलब्धियों और शैली पर प्रकाश डाला है |

उपसंहार-

उपसंहार के अंतर्गत सभी अध्यायों के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए है |

परिशिष्ट-

परिशिष्ट में शोध प्रबंध के संदर्भ ग्रंथों की सूची प्रस्तुत की गयी है |

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के निर्माण में मुझे आदरणीय गुरुवर्या डॉ.प्रा.कल्पना गवली का कुशल एवं अनुभवी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ | उन्होंने अपनी सूक्ष्म एवं मर्मग्राहिणी दृष्टि प्रदान कर मुझे इस विषय का क्रमबध्द विवेचन करने में सक्षम बनाया है | उन्होंने विषय निर्वाचन से लेकर समापन तक जो स्नेह और कार्य तत्परता दिखलाई उसी का यह फल है कि मेरा शोध प्रबंध पूरा हो सका | उनकी प्रेरणा एवं सहयोग हेतु मैं उनकी हृदय से अनुगृहीत हूँ |

मैं विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की विभागाध्यक्षा डॉ.दक्षा मिस्त्री एवं विभाग के अन्य सदस्यों के प्रति हृदय से आभारी हूँ,जिनके परामर्श एवं निर्देशों से इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने में सफलता प्राप्त हुई |

राजी सेठ की ऋण में मैं सदैव रहना पसंद करुँगी क्योंकि रचना कार्य को लेकर उनसे दूरध्वनी पर जो वार्तालाप हुए | वह मेरे लिए अविस्मरणीय है | राजी सेठ ने व्यस्त होते हुए भी अपना कीमती समय निकाल कर पत्र लिखे, शोध से संबंधित सामग्री भेजकर मेरी समस्याओं का समाधान किया |

मेरे शोध कार्य के लिए सबसे अधिक प्रोत्साहन मेरी सास संगीता पवार से मिला | उनके अनंत आशीषों के कारण मैं अपना शोध प्रबंध पूरा कर पायी हूँ | मैं अपने पति राजेश पवार के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ,

जिन्होंने मेरे शोध कार्य को गतिमान किया | उन्होंने ही निराशा के क्षणों में मेरा हौंसला बढ़ाया | मेरे शोध कार्य को पूर्णत्व की ओर ले जाने का श्रेय मेरे पति को जाता है | मेरे बेटे मनांशू ने इस शोध कार्य के लेखन में कभी व्यत्यय नहीं लाया | उसने मेरे अध्ययन काल में जो सहनशीलता दिखाई है वह नि:संदेह प्रशंसनीय है | जिनके कारण यह लेखन का पुष्प खिला है | अत: उसके लिए मेरी ममता ही सर्वस्व है |

पूजनीय माता, भाई-बहन, मेरी ननद और नन्दोई तथा पारिवारिक आत्मीयजनों ने मेरे इस कार्य के संबंध कौतुहल दिखाते हुए मुझे सदैव स्नेहपूर्ण सहयोग दिया | अत:उनके ऋण में मैं हमेशा आबद्ध रहना चाहती हूँ | मैं मेरे मित्र तथा सहयोगियों का हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ,जिन्होंने प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से मुझे सहायता प्रदान की है |

मेरे शोध प्रबंध की सामग्री संकलन के आवश्यक संदर्भ ग्रंथों को उपलब्ध कराने में जिन्होंने मेरी सहायता की वे नेशनल पब्लिशिंग हाऊस,विद्या प्रकाशन, राजकमल प्रकाशन के प्रबंधक आदि के प्रति आभार प्रकट करती हूँ | मैं पुस्तकालय श्रीमती.हंसा मेहता परिवार के प्रति भी सहृदय आभारी हूँ |

अंतत: विघ्नहर्ता गणेशजी और विद्या की देवी सरस्वती माँ के चरणों में अपनी श्रद्धा प्रकट करती हूँ जिनके असीम आशीर्वाद से मैं सामर्थ्य जुटाकर इस शोध कार्य को पूरा कर पाई हूँ |

दिनांक:- विनीत

मिनाक्षी अधिकराव मोरे